ख़ास ख़ोज-ख़बर

एक जरूरी बात- इस शहर के लिए कोई सड़क नहीं जाती

रूस के इस हिस्से में है दुनिया का सबसे उदास शहर, बहती है खून जैसी लाल नदी, घट चुकी रहनेवालों की औसत आयु

● मंथन विदेश ब्यूरो

नॉरिल्स्क। नॉरिल्स्क का तापमान हफ्तों तक -60 डिग्री सेल्सियस पर अटका रहता है। लेकिन उदास करने की यही अकेली वजह नहीं। लगभग पौने दो लाख की आबादी वाले इस शहर में कुछ ऐसा है, जो सबको डराता है। मजबूत से मजबूत कलेजे वाले लोग नॉरिल्स्क को दुनिया के सबसे डिप्रेसिंग शहर का दर्जा देते हैं। रूस के नॉरिल्स्क शहर को सबसे डिप्रेसिंग सिटी माना जाता है। लगातार 6वीं बार फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश माना गया। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट की लिस्ट में अफगानिस्तान और लेबनान सबसे परेशान मुल्क की श्रेणी में रख गए। इसकी वजह भी है। दोनों ही देश काफी वक्त से राजनैतिक और आर्थिक उतार-चढ़ाव झेल रहे हैं, जो वहां रहने वालों को परेशान करने के लिए काफी है। इन सबके बीच रूस का एक ऐसा शहर है, जिसे दुनिया का सबसे उदास हिस्सा कहा जाता है। ये उदासी इतनी ज्यादा है कि साइबेरियाई बॉर्डर पर बसे इस शहर में रहने वालों की औसत आयु पूरे 10 साल कम हो जाती है।

नदी का पानी रंग बदलने लगा: साल 2016 में नॉरिल्स्क से कुछ डरने वाली तस्वीरें आने लगीं। ये डल्डिकेन नदी की तस्वीर थी, जिसमें गहरा लाल पानी बह रहा था। लोगों का कहना था कि नदी का पानी पहले भी अजीब था, लेकिन फिर एकदम से इसका रंग गहरा लाल हो गया। कयास लगने लगे कि पहले से ही कम उम्र जीते नॉरिल्स्क शहर का अंत करीब आ गया है। काफी जांच-पड़ताल के बाद रूसी अधिकारियों ने माना कि शहर में धातुओं पर काम करने वाले बड़े कारखाने हैं। उन्हीं के किसी पाइप में लीकेज हुआ होगा, जिससे नदी का पानी लाल हो गया। उन्होंने लोगों के पानी को साफ करके पीने और इस्तेमाल करने की सलाह दी।

तब क्यों बसे हुए हैं लोग?

अगर सबकुछ इतना ही खराब है तो शहर में पौने दो लाख आबादी क्यों रह रही है! इसकी भी वजह है। दुनिया के सबसे उदास, किसी को भी डिप्रेशन दे सकने वाले शहर में एक अच्छी बात ये है कि यहां तनख्वाह अच्छी-खासी होती है। रूस की औसत इनकम लगभग 739 डॉलर है, जबकि नॉरिल्स्क की इससे 200 डॉलर ज्यादा है। यही वजह है कि यहां पर लोग टिके हुए हैं, लेकिन ये एक तरह के किले जैसा है, न तो लोग मेनलैंड जाते हैं, न ही बाहर से यहां रहने वाले लोग ज्यादा आते हैं।

नहीं है ट्रांसपोर्टेशन की सुविधा

मॉस्को से लगभग 18 सौ मील दूर बसे नॉरिल्स्क को दूसरे शहरों से जोड़ने के लिए कोई सड़क नहीं है। यहां सड़कें तो हैं, लेकिन शहर के भीतर ही एक से दूसरे हिस्से तक पहुंचने के लिए, बाहर से उनकी कोई कनेक्टिविटी नहीं। एक रेलवे लाइन है, जो कारखानों से माल होने के मकसद से बनाई गई थी, लेकिन बर्फीली सर्दियों में ये लाइन भी बंद रहती है। बाहरी दुनिया से जोड़ने के लिए हवाई सेवा तो है, लेकिन बर्फबारी की वजह से वो भी ज्यादातर बंद रहती है।

जहां कदम रखो, मिलती हैं इंसानी हड्डियां!

यहां जलाया गया था 1 लाख 60 हजार लोगों को जिंदा... जहां कदम रखो, मिलती हैं इंसानी हड्डियां!

● मंथन विदेश ब्यूरो

पोवेग्लिया द्वीप। साल 1960 में एक अमीर आदमी ने इस टापू को खरीद लिया था, लेकिन उसके परिवार के साथ भी कुछ हादसे हुए और उसने भी आत्महत्या कर ली। तब से इस द्वीप को शापित मान लिया गया। वैसे तो धरती पर एक से बढ़कर एक भूतिया जगहें हैं। कई तो इतनी ज्यादा खतरनाक होती हैं, जहां सरकारें भी न जाने की सलाह देती हैं। ऐसी ही एक जगह है, जहां कदम-कदम पर आपको इंसानी हड्डियां देखने को मिल जायेंगी। बताया जाता है कि यहां 1 लाख 60 हजार लोगों को जिंदा जलाया गया था।

सरकार ने लगा रखी है जाने पर पाबंदी

इटली के पोवेग्लिया आइलैंड के बारे में कहा जाता है कि यहां मौत का वास है और जो भी यहां जाता है वो वापस नहीं आता है। यूं तो दुनिया की भूतिया जगहों को टेस्ट करने के लिए लोग वहां जाते हैं। वही, इस आइलैंड पर जाने के हिम्मत कोई नहीं कर पाता। जो गए भी उनमें से कुछ तो वापस नहीं आ पाए या जो आए उनका कहना यही था कि यह आइलैंड अब शापित है। लोगों का कहना है कि यहां अजीब से आवाजें सुनाई देती हैं। इटैलियन सरकार भी यहां जाने वाले लोगों की गारंटी नहीं लेती है।

मिलते हैं इंसानी अवशेष: इटली के वेनिस और लिडो शहर के बीच मौजूद इस द्वीप को वेनेशियन खाड़ी भी कहा है। यह टापू करीब 17 एकड़ के क्षेत्र में फैला है। कहा जाता है कि यहां की आधी जमीन इंसानी अवशेषों से बनी है। इसके इतिहास के बारे में बताया जाता है कि इटली में प्लेग की महामारी फैलने के दौरान सरकार ने महामारी को रोकने के लिए 1 लाख 60 हजार संक्रमित लोगों को इस टापू पर लाकर जला दिया था। इसके अलावा, ब्लैक फीवर बीमारी से मरे लोगों को भी इसी टापू पर लाकर दफना दिया गया था।

आइलैंड से आती हैं अजीब आवाजें

यहां एक अस्पताल भी था, लेकिन वह भी जल्दी ही बंद हो गया। इसके बाद सन 1960 में एक अमीर आदमी ने इस टापू को खरीद लिया था, लेकिन उसके परिवार के साथ भी कुछ हादसे हुए और उसने भी आत्महत्या कर ली। तब से इस द्वीप को शापित मान लिया गया।

स्पेशल खबर

यह उन लोगों के लिए है जिन्हें ऊंचाई और पानी की लहरों से डर नहीं लगता

यह है दुनिया का सबसे खतरनाक होटल, पानी के नीचे रहते हैं 'भूखे दरिंदे', फिर भी लोग जाने को रहते हैं बेताब

● मंथन विदेश ब्यूरो

अटलांटिक सागर में चार खंभों पर खड़ा फ्राइंग पैन होटल बेहद शानदार है, यह उन लोगों के लिए है जिन्हें ऊंचाई और पानी की लहरों से डर नहीं लगता। होटल तक नाव और हेलीकाप्टर से पहुंचा जा सकता है। यहां एक व्यक्ति का खर्च 498 डॉलर यानी (40 हजार 871 रुपये) हैं। यहां लोग तीन दिन तक आराम से ठहर सकते हैं। होटल में सात कमरे, रसोई, स्टोररूम, ऑफिस, मनोरंजन क्षेत्र और शीचालय की सुविधा शामिल है। छत पर हेलीपैड है। पानी के नीचे कैमरा है ताकि नीचे का लाइव फुटेज ऊपर दिखता रहे। टावर के चारों ओर डबल डेकर स्टेनलेस झंझरी वाले रास्ते हैं। यहां से काफी शानदार व्यू आता है।

फ्राइंग पैन होटल अमेरिका के उत्तरी कैरोलिना के पूर्वी तट से 32 मील (52 किमी) की दूरी पर स्थित है। यह समुद्र तल से 135 फीट (41 मीटर) ऊपर चार खंभों पर खड़ा है।

फ्राइंग पैन होटल कमजोर दिल वालों या ऊंचाई से डरने वालों के लिए नहीं है। यह उस प्रकार का होटल नहीं है जहां चेक-इन के समय आपका रेड कार्पेट वेलकम किया जाएगा। यहां पहुंचने के लिए आपको या तो हेलीकॉप्टर से लिफ्ट लेनी होगी या नाव का इस्तेमाल करना होगा। टावर के चारों ओर डबल डेकर स्टेनलेस झंझरी वाले रास्ते हैं। यहां जाने का मतलब है कि आप अटलांटिक महासागर के बीच में जा रहे हैं। यहां से आप पानी की लहरों और सूर्यास्त को देख सकेंगे।

टॉवर के मंच में दो मंजिलें हैं। एक रहने का क्षेत्र है जिसमें सात बेडरूम, रसोई, स्टोररूम, ऑफिस, मनोरंजन क्षेत्र और शौचालय की सुविधा शामिल है। जबकि ऊपर हेलीपैड है। यहां खूबसूरत स्टेनलेस स्टील की रसोई है। यहां आप अपना भोजन तैयार कर सकते हैं या होटल के शेफ को बुक कर सकते। फ्राइंग पैन टॉवर जहाजों के सुरक्षा गार्ड के रूप में विकसित हुआ था ताकि सागर से जा रही जहाजों पर जब कोई खतरा मंडराए तो उन्हें सूचित किया जा सके, लेकिन 2010 में, ओक्लाहोमा के रिचर्ड नील ने इसे पूरी तरह बदलने की सोची। होटल के नीचे भूखी शार्क भी हैं, लेकिन इसमें घबराने जैसी कोई बात नहीं है, क्योंकि वे वास्तव में मानव मांस पसंद नहीं करती हैं। इसलिए, इस बात की बहुत कम आशंका है कि वे आपको चखना चाहेंगी। पानी के लाइव फुटेज से पता चलता रहता है कि शार्क है या नहीं, ताकि आप इसमें डुबकी लगा सके।

1979 से पहले वैज्ञानिकों को पता ही नहीं था कि गुरु ग्रह का कोई वलय भी है

गुरु ग्रह के पास क्यों नहीं है शनि कि तरह बड़ा वलय

● मंथन विदेश ब्यूरो

नासा। वैज्ञानिकों का मानना है कि गुरु ग्रह के पास शनि से भी ज्यादा बड़ा वलय होना चाहिए था। वैज्ञानिकों का मानना है कि गुरु ग्रह के पास शनि से भी ज्यादा बड़ा वलय होना चाहिए था। गुरु ग्रह के बारे में एक पहेली लंबे समय से वैज्ञानिकों को परेशान करती रही कि उसका शनि ग्रह की तरह वलय क्यों नहीं है। शनि से बहुत ही ज्यादा शक्तिशाली गुरुत्व वाला ग्रह होने के बाद भी गुरु के पास शनि की तरह बड़ा नही बल्कि बहुत ही पतला वलय है। नए अध्ययन में बताया गया है कि गुरु ग्रह के चार सबसे बड़े ग्रह इसकी पीछे की वजह हैं।

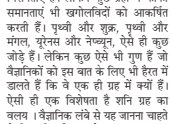

सौरमंडल के हर ग्रह की अपनी विशेषताएं हैं। लेकिन कुछ ग्रहों में काफी समानताएं भी खगोलविदों को आकर्षित करती हैं। पृथ्वी और शुक्र, पृथ्वी और मंगल, यूरेनस और नेप्च्यून, ऐसे ही कुछ जोड़े हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी गुण हैं जो वैज्ञानिकों को इस बात के लिए भी हैरत में डालते हैं कि वे एक ही ग्रह में क्यों हैं। ऐसी ही एक विशेषता है शनि ग्रह का वलय। वैज्ञानिक लंबे से यह जानना चाहते थे कि शनि की तरह ऐसा वलय गुरु ग्रह का क्यों नहीं है। अब शोधकर्ताओं की टीम ने इस सवाल का जवाब खोज निकाला है।

बिना वलय के नहीं हैं गुरु ग्रह: यह सवाल इसलिए भी विचारणीय है कि गुरु ग्रह का गुरुत्व तो शनि से भी काफी ज्यादा है जिससे उसमें भी शनि कीतरह एक बड़ा वलय बनने की संभावना कुछ ज्यादा हो जाती है लेकिन फिर भी ऐसा नहीं हो सका। हकीकत यह है कि गुरु ग्रह का वास्तव में एक बहुत ही महीन और पतला छल्ला या वलय है। इसकी खोज साल 1979ल में नासाके वॉयेजर 1अंतरिक्ष यान ने की थी। मजेदार बात है यह है कि 1979 से पहले वैज्ञानिकों को पता ही नहीं था कि गुरु ग्रह का कोई वलय भी है।

ख़ास साप्ताहिक फ़ोटो

तेरहवीं सदी का मुख्य सूर्य मंदिर, एक महान रथ रूप में बना है

बोलती तस्वीर कोणार्क सूर्य मन्दिर जगन्नाथपुरी से 35 किमी उत्तर-पूर्व में कोणार्क नामक शहर में प्रतिष्ठित है। सन् 1984 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी है। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब को उनके शाप से कोढ़ रोग हो गया था। साम्ब ने मित्रवन में चंद्रभागा नदी के सागर संगम पर कोणार्क में, बारह वर्षों तक तपस्या की और सूर्य देव प्रसन्न किया था। सूर्यदेव, ने इनके रोग का भी निवारण कर दिया था। तदनुसार साम्ब ने सूर्य भगवान का एक मन्दिर निर्माण का निश्चय किया।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रूपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रूपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रूपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रुपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रूपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रुपए

नोट : 1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. रजत सक्सेना द्वारा जेवन ऑफसेट वर्क्स, 119, पुल बोगदा, भोपाल (म.प्र.)-462023 से मुद्रित एवं म.न. 31, सेक्टर-1, शाक्तिनगर, भोपाल, मध्यप्रदेश-462024 से प्रकाशित। प्रधान संपादक डॉ. रजत सक्सेना, संपादक- महेश प्रताप जड़िया, सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।